Websites:
http://www.sciencepub.net/academia
http://www.sciencepub.net

Emails:
aarena@gmail.com
editor@sciencepub.net

Academia Arena

MARSLAND PRESS
Multidisciplinary Academic Journal Publisher

Principal of Mahatma Gandhi on New Education Policy

[1]Ashok Kumar, [2]Dr. Alka Kumari and [3]Dr. Devendra

[1]Research Scholar, Department of Education, SunRise University, Alwar, Rajasthan (India)
[2]Assistant Professor, Department of Education, SunRise University, Alwar, Rajasthan (India)
Email: ashokkumarrtk7@gmail.com

Abstract: Gandhi's concept of education is of quite significance in the contemporary situation. His philosophical concept of education is entirely based on the development of human personality, to maintain the discipline, to create the manual work with learning and to develop the culture of the peace. He was a great educationist and an individualist par excellence. He knew that education is the most important means in the society which can be used as an instrument of socio-economic progress, material advancement, political evolution and moral development of an individual. Gandhi's whole philosophy and work was based on ethics and morality. His concept of education is also founded on ethics and morality. It may be said that his concept of education has full of religious ideas. His idea of religion is different from common concept. His concept of religion is 'service of humanity'. For the spirit of religions he propounded 'Nai Talim' or 'basic education'. This new education system, Archarya Kriplani says, '...is the coping stone of Gandhi's social and political edifice'. His philosophical thought on education is highly pedestal that creates the socio-economic development of the society.
[Ashok Kumar, Dr. Alka Kumari and Dr. Devendra P.K.. **Principal of Mahatma Gandhi on New Education Policy.** *Academ Arena* 2022;14(4):136-140]. ISSN 1553-992X (print); ISSN 2158-771X (online). http://www.sciencepub.net/academia. 5. doi:10.7537/marsaaj140422.05.

Keywords: **Principal**; Mahatma Gandhi; Education; Policy

नई शिक्षा नीति पर महात्मा गांधी के सिद्धांत

सारांश: गांधी की शिक्षा की अवधारणा समकालीन स्थिति में काफी महत्वपूर्ण है। शिक्षा की उनकी दार्शनिक अवधारणा पूरी तरह से मानव व्यक्तित्व के विकास, अनुशासन बनाए रखने, सीखने के साथ मैनुअल काम बनाने और शांति की संस्कृति को विकसित करने पर आधारित है। वह एक महान शिक्षाविद् और एक व्यक्तिवादी उत्कृष्टता थे। वह जानता था कि शिक्षा समाज में सबसे महत्वपूर्ण साधन है जिसका उपयोग व्यक्ति के सामाजिक-आर्थिक प्रगति, भौतिक उन्नति, राजनीतिक विकास और नैतिक विकास के साधन के रूप में किया जा सकता है। गांधी का पूरा दर्शन और कार्य नैतिकता और नैतिकता पर आधारित था। उनकी शिक्षा की अवधारणा भी नैतिकता और नैतिकता पर आधारित है। यह कहा जा सकता है कि उनकी शिक्षा की अवधारणा धार्मिक विचारों से भरी हुई है। धर्म के बारे में उनका विचार आम अवधारणा से अलग है। धर्म की उनकी अवधारणा 'मानवता की सेवा' है। धर्म की भावना के लिए उन्होंने 'नई तालीम' या 'बुनियादी शिक्षा' का प्रतिपादन किया। यह नई शिक्षा प्रणाली, आचार्य कृपलानी कहते हैं, '... गांधी की सामाजिक और राजनीतिक इमारत का मुकाबला पत्थर है'। शिक्षा पर उनका दार्शनिक विचार अत्यधिक आधार है जो समाज के सामाजिक-आर्थिक विकास का निर्माण करता है।
शब्द संकेत : शिक्षा दर्शन ,महात्मा गाँधी ,शिक्षण विधियाँ

प्रस्तावना:

गांधीजी के प्रयास वास्तव में एक ऐसी शिक्षा प्रणाली के दिवास्वप्न के रूप में सामने आए, जिसमें विद्यार्थियों को सत्य और अहिंसा के मूलभूत सिद्धांतों के साथ देश की आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक समृद्धि तथा राष्ट्रीय समाज के लिए तैयार किया जाता है। उनके शैक्षिक प्रयोगों ने अविनाशी अंतर्दृष्टि प्रदान की, जो आज तक प्रासंगिक हैं। गांधीजी के सिद्धांत केवल भारत के लिए नहीं, बल्कि संपूर्ण विश्व के हैं। इसीलिए संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) के महानिदेशक से बातचीत करते समय मैंने सत्य और अहिंसा के संदेश को पूरे विश्व में प्रसारित करने के लिए दोहराया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति इक्कीसवीं शताब्दी की आवश्यकताओं और मांगों को पूरा करने के लिए अपनी रणनीतियां बनाते हुए, गांधीजी के दृष्टिकोण को भी रेखांकित करती है। ऐसे पांच तरीके हैं, जो उनकी शिक्षा प्रणाली भारत और पूरे विश्व में शिक्षा के मुद्दे पर वाद-विवाद प्रस्तुत करने के लिए उपयुक्त हैं। इनमें पहला है- 'शांति के लिए शिक्षा'। गांधीजी के लिए सत्य और अहिंसा श्रेष्ठ मूल्य थे। छात्रों को मानव समुदाय के बीच शांतिपूर्ण और सहयोगात्मक जीवन के लिए तैयार रहना चाहिए, नई तालीम उसी की अभिव्यक्ति थी। हमारी नई शिक्षा नीति का मूल सिद्धांत अच्छे मनुष्य विकसित करना है, जो समतापूर्ण और समावेशी समाज के विकास में योगदान दे सकें, जिसमें तर्क, करुणा, सहानुभूति, सहनशीलता, वैज्ञानिक प्रवृत्ति तथा नैतिकता और मूल्यों को कायम रखने के साथ-साथ सर्जनात्मकता का भी समावेश हो।

राजनीतिः गांधीजी और राष्ट्रीय शिक्षा नीति

दूसरी प्रमुख बात मातृभाषा की आती है। गांधीजी ने इस बात पर जोर दिया कि बच्चे की शिक्षा में मातृभाषा को केंद्रीय या प्रमुख स्थान मिलना चाहिए। उनका विश्वास था कि विदेशी माध्यम में अध्यापन से छात्र राष्ट्र की आध्यात्मिक और सामाजिक विरासत से वंचित हो जाते हैं। उनके सिद्धांतों को प्रतिध्वनित करते हुए, नई शिक्षा नीति बहुभाषावाद को बढ़ावा देती है और स्पष्ट करती है कि 'जहां भी संभव हो, शिक्षा का माध्यम घरेलू भाषा, मातृभाषा, स्थानीय भाषा या क्षेत्रीय भाषा होनी चाहिए।' नई शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं के संवर्धन, परिरक्षण और संरक्षण के लिए अनेक पहल प्रस्तावित की गई हैं। प्रधानमंत्री ने इक्कीसवीं शताब्दी के स्कूली शिक्षा सम्मेलन में जोर देकर कहा था कि एस्तोनिया, आयरलैंड, फिनलैंड, जापान, दक्षिण कोरिया और पोलैंड जैसे देश अपनी प्राथमिक शिक्षा अपनी मातृभाषा में प्रदान करते हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि छोटे बच्चे अपनी गृहभाषा या मातृभाषा में अवधारणाओं को जल्दी सीखने और समझने में सक्षम होते हैं।

गांधीजी का मानना था कि शारीरिक प्रशिक्षण ही बुद्धि को बढ़ाने का एकमात्र साधन है। व्यावसायिक शिक्षा को यांत्रिक नहीं, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि से भी पढ़ाया जाना चाहिए। प्रयोगवाद, निर्माणवाद जैसे सिद्धांत व्यावसायिक शिक्षा के समावेश के माध्यम से ही समृद्ध होंगे। श्रम की गरिमा-महत्ता का संरक्षण पहले किया जाना चाहिए। नई शिक्षा नीति के आगमन के साथ कला और विज्ञान, पाठ्यक्रम और पाठ्यचर्या गतिविधियों, व्यावसायिक और अकादमिक धाराओं के बीच कोई सख्त विभाजन नहीं होगा। नई शिक्षा नीति गांधीजी की परिकल्पना के अनुरूप लक्ष्य निर्धारित करती है, जो 2025 तक कम से कम पचास फीसद स्कूल और उच्च शिक्षा प्रणाली को व्यावसायिक शिक्षा के साथ संबद्ध करने का प्रयास करेगी।

व्यावसायिक शिक्षा का एकीकरण माध्यमिक विद्यालय के प्रारंभिक वर्षों में शुरू होगा और फिर चरणबद्ध ढंग से उच्च शिक्षा में शामिल किया जाएगा। इसे देखते हुए शिक्षा मंत्रालय शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय व्यावसायिक मानकों के विकास पर काम करेगा। इसे मिशन मोड में अंजाम दिया जाएगा और वर्ष 2022 तक राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा एनसीईआरटी, एससीईआरटी, शिक्षकों के परामर्श और व्यावसायिक शिक्षा के विशेषज्ञ निकायों तथा उच्च शिक्षा संस्थानों के परामर्श से पूरा किया जाएगा।

राष्ट्र निर्माण के लिए जरूरी है कि हम लड़कियों को शुरुआती वर्षों से ही सशक्त बनाएं। समानता को एक उत्साही सपने के रूप में ही नहीं दिखना चाहिए, बल्कि स्कूलों में भी दिखना चाहिए। लड़कियों को बिना किसी भेदभाव के शिक्षा दी जानी चाहिए। नई शिक्षा नीति समान रूप से समानता के सिद्धांत को बढ़ावा देती है। नई शिक्षा नीति का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी बच्चा जन्म या पृष्ठभूमि की परिस्थितियों के कारण सीखने और उत्कृष्टता हासिल करने का कोई अवसर खो न दे। यह नीति सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित समूहों पर विशेष बल देने के साथ लैंगिक पहचान और वंचित वर्गों के हितों को भी ध्यान में रखती है। वंचित क्षेत्रों और समूहों के लिए विशेष शिक्षा क्षेत्रों के साथ-साथ लिंग समावेशन निधि का सृजन किया जाएगा। इन प्रयासों से भारत की सभी लड़कियों और ट्रांसजेंडर विद्यार्थियों को भी समान गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करने की क्षमता में मदद मिलेगी।

शिक्षक के बिना शिक्षा के वास्तविक लक्ष्य हासिल नहीं किए जा सकते। एक शिक्षक शिक्षा प्रणाली का आधार है। गांधीजी की मान्यता थी कि शिक्षकों को युवाओं की आकांक्षाओं का मार्ग प्रशस्त करते हुए विद्यार्थियों के हृदय और आत्मा को स्पर्श करना चाहिए। शिक्षक को पर्याप्त रूप से भुगतान

किया जाना चाहिए। नई शिक्षा नीति की सिफारिशों के अनुसार 2022 तक शिक्षा मंत्रालय शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय व्यावसायिक मानकों का विकास करेगा। मानकों में कार्यकाल, व्यावसायिक विकास प्रयास, वेतन वृद्धि, प्रोन्नति सहित शिक्षक करियर प्रबंधन से संबंधित विभिन्न पहलुओं को निर्धारित करने में मदद मिलेगी।

गांधीजी द्वारा निरूपित विभिन्न प्रकार की शिक्षा प्रणालियां आज भी अर्थवान हैं। ये हमारे लिए इक्कीसवीं सदी की आकांक्षाओं को पूरा करने की नींव हैं। इस शिक्षा नीति में 'पांच आई' का समावेश है- इंडियन (भारतीय), इंटरनेशनल (अंतरराष्ट्रीय), इंपैक्टफुल (प्रभावकारी), इंटरएक्टिव (अंत:क्रियात्मक) और इन्क्लूसिव (समावेशी)। इसीलिए हमें गांधीजी के विचारों, शब्दों और कर्मों द्वारा चिष्टिनत आत्मनिर्भर युवा विद्यार्थियों की शिक्षा और सर्वांगीण विकास के लिए सभी राज्यों, शिक्षाविदों, कुलपतियों, शिक्षकों और अभिभावकों को आमंत्रित कर गांधी जयंती की एक सौ इक्यावनवीं वर्षगांठ को प्रतीकात्मक और यादगार बनाना चाहिए। इस काम की शुरुआत एक प्रतिज्ञा के रूप में होनी चाहिए, वैसी ही प्रतिज्ञा जैसे कि नई तालीम के तत्कालीन प्रचारकों ने ली थी- 'शिक्षा में सत्य और अहिंसा की भावना को सांस लेने के समान और बच्चों तथा वयस्कों को एक ऐसा समाज बनाने के लिए तैयार करना, जिसमें स्वतंत्रता, नैतिक और भौतिक प्रगति जिम्मेदारी के साथ लोगों के हाथों में पहुंचे'।

महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन के सिद्धांतों का वर्णन

महात्मा गाँधी भारत के एक महान विचारक, समाज सुधारक तथा शिक्षाविद थे। उनका शिक्षा दर्शन सत्य, अहिंसा तथा सत्याग्रह पर आधारित है। शिक्षा की उनकी लोकप्रिय परिभाषा अर्थात् "शिक्षा से मेरा अभिप्राय बच्चे के शरीर, मस्तिष्क एवं आत्मा का उत्तम रूप से सर्वांगीण विकास करना है", मानव व्यक्तित्व के संपूर्ण विकास को सूचित करता है : शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक विकास।

महात्मा गाँधी के अनुसार, सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, निर्भयता, विश्वास, मानवता आदि जैसे मूल्य किसी भी व्यक्ति के जीवन के आधार हैं। उनकी बुनियादी शिक्षा, शिल्प आधारित शिक्षा, नैतिक एवं मूल्य शिक्षा की अवधारणा का वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर महान प्रभाव है।

महात्मा गांधी के अनुसार शिक्षा

वे केवल साक्षरता को शिक्षा नहीं मानते थे। उनके अनुसार, साक्षरता न तो शिक्षा का अन्त है न प्रारंभ। यह केवल एक साधन है जिसके द्वारा पुरुष और स्त्रियों को शिक्षित किया जा सकता है। गांधीजी के अनुसार, शिक्षा से मेरा तात्पर्य एक ऐसी प्रणाली से है जो बालक एवं मनुष्य की समस्त प्रतिभाओं, जिसमें शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक भी सम्मिलित है, का विकास करें।

महात्मा गांधी के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

गांधीजी का स्पष्ट प्रभाव उनके शैक्षिक उद्देश्यों पर परिलक्षित होता है।

1. शिक्षा ऐसी हो जो छात्रों को शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बना सके।
2. शिक्षा द्वारा छात्रों में सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास किया जाना चाहिए।
3. बालकों में ऐसी भावना का विकास करे जिससे बालक अच्छे-बुरे, नैतिक-अनैतिक, करणीय-अकरणीय, त्याज्य एवं ग्रहणीय तथ्यों के मध्य अंतर कर सके।
4. शिक्षा द्वारा छात्रों में अनुशासित स्वतंत्रता की भावना विकसित की जाये। 'सा विद्या या विमुक्तये' इस विचारधारा का गांधीजी पूरा समर्थन करते है। किंतु वे मुक्त स्वतंत्रता के पक्षपाती नही थे।

शिक्षा प्रणाली

महात्मा गांधी नें पाठ्यचर्या में हस्तकौशल एवं उद्योग को सर्वप्रमुख स्थान दिया। इसके बाद क्रमश: मातृभाषा, व्यावहारिक गणित, सामाजिक विषय, सामान्य विज्ञान, संगीत, चित्रकला, स्वास्थ्य विज्ञान और आचरण शिक्षा को रखा। शिक्षण विधि के अंतर्गत उन्होनें करके सीखना, अनुभव द्वारा सीखना एवं समन्वित ज्ञान के लिये सहसंबंध विधि को सर्वोत्तम माना।

बुनियादी शिक्षा : नई तालीम

सन् 1937 में गांधीजी ने वर्धा में हो रहे 'अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन' जिसे वर्धा शिक्षा सम्मेलन कहा जाता है में नई तालीम के नाम से एक जीवन दर्शन तथा शिक्षा पद्धति देश के समक्ष प्रस्तुत की, जो अहिंसक,

समतामूलक, न्यायाधिष्ठित समाज निर्माण का उद्देश्य रखती है।

महात्मा गांधी ने जीवनभर शिक्षा के क्षैत्र में अनेक प्रयोग किए। उन्होनें स्वयं के द्वारा प्रवर्तित शिक्षा को 'नई तालीम' नाम दिया। गांधीजी का यह स्पष्ट मानना था कि किसी भी प्रकार का परिवर्तन लाने के लिए शिक्षा में परिवर्तन आवश्यक है। इसीलिए अहिंसक सामाजिक क्रांति के लिये नई तालीम एक अमोघ एवं अचूक शस्त्र है। उनकी इस शिक्षा योजना के पीछे स्वयं उनके जीवन के अनुभव है। अपनी शिक्षा में गांधीजी ने 'आत्मा' के विकास का आधार 'सत्य', 'सामाजिक व्यवस्था' का आधार 'अहिंसा' और 'आर्थिक ढांचे' का आधार 'अपरिग्रह' को माना। कर्म केन्द्रित शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के साथ ही उसे एक समाजोपयोगी प्राणी भी बनाती है।

अपने अध्ययनकाल के दौरान ही गांधीजी ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली की कमियों व इसकी निरर्थकता को गंभीरता से महसूस किया था। इसी समय से उनका यह निश्चित मत हो गया था कि शिक्षा यदि नैतिकता नहीं सिखाती तो वह शिक्षा ही नहीं है। इसके साथ ही विद्याभ्यास में शारीरिक शिक्षा का समान स्थान होना चाहिए। स्कूली शिक्षा में धर्म की शिक्षा का अभाव उन्हें हमेशा ही खटकता रहा। लन्दन में कानून का अध्ययन करते हुए गांधीजी ने यह अनुभव किया कि वास्तविक शिक्षण तो स्वाध्याय या स्व-शिक्षण से ही प्राप्त किया जा सकता है।

जीवन में ऐसा कुछ भी नहीं है जो शिक्षा से संबंधित न हो। इसीलिये गांधीजी ने आहार-विज्ञान, प्राकृतिक चिकित्सा, स्वच्छता व स्वास्थ्य से संबंधित विषयों का गंभीरता से अध्ययन किया तथा खाना बनाना, कपड़े धोना, प्रेस करना, सफाई व अन्य दूसरे गृह-कार्य इत्यादि को भी सीखा।

कानून की पढ़ाई पूरी करने के बाद गांधीजी ने यह अनुभव किया कि वर्तमान शिक्षा का व्यवहार से कोई संबंध नही है और शिक्षा का संबंध काम से न हो तो यह शिक्षा बेकार है। इसलिये शिक्षा में व्यवहार के ज्ञान का तत्व अनिवार्य रूप से होना चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य पैसा कमाना या केरियर बनाना नहीं, बल्कि अच्छा बनना और देशसेवा करना है। फीनिक्स आश्रम में उन्होनें तीन घण्टे पढ़ाई, दो घण्टे खेती का काम, दो घण्टे इंडियन ओपीनियन समाचार पत्र में काम अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाया। टॉलस्टॉय आश्रम की पाठशाला में गांधीजी ने शिक्षा में उद्योग को शामिल किया। गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने गांधीजी की नयी तालीम को देखकर कहा था, ''इसमें स्वराज की चाबी मौजूद है।'' साबरमती आश्रम में गांधीजी ने विधिवत् पाठशाला प्रारं शिक्षण मातृभाषा में देना, विद्यार्थियों को स्वावलंबी बनाना, सभी विषयों का ज्ञान देना शामिल था। उन्होनें अनुभव किया कि शुद्ध शिक्षा के बिना राजनैतिक क्षैत्र में भी स्वराज की दिशा में किए गए सब प्रयत्न व्यर्थ होंगे। 1937 में गांधीजी ने नई तालीम के नाम से जिस उद्योग केन्द्रित स्वावलंबी शिक्षा का प्रारूप देश के समक्ष रखा, उस संदर्भ में उनका कहना है कि शिक्षा का माध्यम ही किसी उद्योग को बनाना चाहिए और चुने हुए उद्योग के माध्यम से सभी विषयों की शिक्षा देनी चाहिए। शारीरिक श्रम द्वारा बच्चों का मानसिक विकास होना चाहिए और शारीरिक श्रम की शिक्षा महज इसलिये नही दी जाएगी कि बच्चे स्कूल के संग्रहालयों के लिए चीजें तैयार करें अथवा ऐसे खिलौने बनाए जिनकी कोई कीमत ही न हो। शारीरिक श्रम द्वारा ऐसी चीजों का उत्पादन होना चाहिए जो बाजार में बिक सकती हो।

नई तालीम के संबंध में 14 दिसंबर 1947 को अपनी अंतिम चर्चा में गांधीजी ने कहा था, ''नई तालीम जीवनभर जारी रहनी चाहिए। इसका क्षैत्र गर्भाधान से अंतिम संस्कार तक है। सामान्यत: यह माना जाता है कि बुनियादी शिक्षा उद्योग द्वारा शिक्षण देना है। यह एक हद तक सही है परन्तु यह संपूर्ण सत्य नहीं है। नई तालीम की जडं़े और गहरी जाती है। यह तो व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में सत्य-अहिंसा के आधार पर टिकी है। सच्चा शिक्षण वह है जो व्यक्ति को सच्ची स्वतंत्रता दिलाये।'

गांधीजी की बुनियादी शिक्षा की आज भी आवश्यकता है क्योंकि आज विश्व में जो विनाश ओर तबाही फैल रही है वह मनुष्यों में मानवता की कमी के कारण बढ़ती जा रही है। गांधीजी ने क्रिया द्वारा सीखने पर बल दिया जो आज भी उतना ही आवश्यक है क्योंकि स्वयं करके सीखा हुआ ज्ञान स्थायी होता है, जो प्रत्येक क्षैत्र के लिये आवश्यक है। गांधीजी ने शारीरिक श्रम का सम्मान किया। उनके अनुसार मनुष्य को अपना कार्य स्वयं करना चाहिए। किसी पर निर्भर नहीं होना चाहिए। जो काम का आदर करेगा वही उत्पादन कार्य से जुड़ सकता है।

संदर्भ:

1. नारायण डॉ. इकबाल, ''आधुनिक राजनीतिक विचारधाराएँ'', ग्रन्थ विकास, जयपुर, 2005, पृष्ठ 409
2. बहरवाल मनोज कुमार, ''भारतीय राजनीतिक चिन्तक'', हिमांशु पब्लिकेशन, उदयपुर, 2014, पृष्ठ 392
3. महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन, विकीपीडिया
4. धवन जी.एन., ''द पॉलिटिकल फिलॉसफी ऑफ महात्मा गांधी'', पृष्ठ 86

References

[1]. Google. http://www.google.com. 2022.
[2]. Journal of American Science. http://www.jofamericanscience.org. 2022.
[3]. Life Science Journal. http://www.lifesciencesite.com. 2022.
[4]. http://www.sciencepub.net/nature/0501/10-0247-mahongbao-eternal-ns.pdf.
[5]. Ma H. The Nature of Time and Space. Nature and science 2003;1(1):1-11. doi:10.7537/marsnsj010103.01. http://www.sciencepub.net/nature/0101/01-ma.pdf.
[6]. Marsland Press. http://www.sciencepub.net. 2022.
[7]. National Center for Biotechnology Information, U.S. National Library of Medicine. http://www.ncbi.nlm.nih.gov/pubmed. 2022.
[8]. Nature and Science. http://www.sciencepub.net/nature. 2022.
[9]. Wikipedia. The free encyclopedia. http://en.wikipedia.org. 2022.

11/25/2022